Handout pdf 12 th kaimare mein band - module-1 कक्षा – बारहवीं , विषय – हिन्दी (केंद्रिक)

 पाठ्यपुस्तक- आरोह (भाग–2)

कविता -कैमरे में बंद अपाहिज

 कवि – रघुवीर सहाय

 कैमरे में बंद अपाहिज – रघुवीर सहाय

 कवि परिचय

जीवन परिचय- रघुवीर सहाय का जन्म सन 1929 में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुआ था । उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से ही स्नातकोत्तर अंग्रेजी साहित्य में उत्तीर्ण की ।

पत्रकारिता – रघुवीर सहाय पेशे से पत्रकार थे । ये आल इंडिया रेडियो के हिन्दी समाचार विभाग से सम्बद्ध रहे , फिर हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका ‘ कल्पना ‘ और उसके बाद ‘दैनिक नवभारत टाइम्स’ तथा ‘दिनमान’ से सम्बद्ध रहे ।

रचनाएं – रघुवीर सहाय की गणना ‘दूसरा तार सप्तक’ के कवियों तथा समकालीन कविता के प्रसिद्ध कवियों में होती है । इनके प्रमुख काव्य- संग्रह हैं - ‘सीढ़ियों पर धूप में’, ‘आत्महत्या के विरुद्ध’, ‘हंसो हंसो जल्दी हंसो’, “लोग भूल गए हैं’ ।

सम्मान – साहित्य सेवा के कारण इन्हें ‘साहित्य अकादमी पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया ।

निधन – सन 1990 में दिल्ली में इनका निधन हो गया ।

काव्यगत विशेषताएँ –

रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील ‘नागर’ चेहरा हैं । सड़क ,चौराहा ,दफ्तर, अखबार , संसद ,बस ,रेल ,और बाज़ार की बेलौस भाषा में उन्होंने कविता लिखी । घर – मुहल्ले के चरित्रों पर कविता लिखकर इन्हें हमारी चेतना का स्थायी नागरिक बनाया । हत्या–लूटपाट और आगजनी , राजनैतिक भ्रष्टाचार और छल – छद्म इनकी कविता में उतरकर खोजी पत्रकारिता की सनसनी खेज रपटें नहीं रह जाते, आत्मान्वेषण का माध्यम बन जाते हैं । यह ठीक है कि पेशे से वे पत्रकार थे ,लेकिन वे सिर्फ पत्रकार ही नहीं , सिद्ध कथाकार और कवि भी थे । कविता को उन्होने एक कहानीपन और एक नाटकीय वैभव दिया ।

भाषा शैली - रघुवीर सहाय की अधिकतर रचना बातचीत की शैली में है। ये अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते हैं । इन्होंने कविताओं में अत्यंत साधारण शैली में समाज की दारुण विडंबनाओं को व्यक्त किया है । साथ ही अपने काव्य में सरल,सरस व बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है ।

 कैमरे में बंद अपाहिज कविता का मूलभाव

‘कैमरे में बंद अपाहिज ‘ कविता को ‘लोग भूल गए हैं’ काव्य संग्रह से लिया गया है । इस कविता मे कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ – साथ दूर- संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया गया है । किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुंचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरे को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए । आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है । यह कविता टेलीविज़न स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है । साथ ही उन सभी व्यक्ति की ओर इशारा करती है जो दुख- दर्द , यातना- वेदना आदि को बेचना चाहते है ।

इस कविता में दूरदर्शन के संचालक स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरों को कमजोर मानते हैं । वे विकलांग से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं ? आप अपाहिज क्यों हैं ? आपको इससे क्या दुख है ? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है । प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है । इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है । प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करूणा का भाव जाग सके । इसी से उसका उद्देश्य पूरा हो सकेगा । वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है , परंतु परदे पर वक्त की कीमत है वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है ।

 कविता के शब्दार्थ

समर्थ=सक्षम । शक्तिवान=ताकतवर । दुर्बल=कमजोर । अपाहिज=विकलांग । अपाहिजपन=विकलांगता । इशारा=संकेत । रोचक=रुचिकर । वास्ते=के लिए । कसमसाहट=घबराहट । आशा=उम्मीद। पीड़ा=वेदना ।

दर्शक=देखने वाला । धीरज=धैर्य । संग=साथ । वक्त=समय । सामाजिक=समाज से संबंधित । कसर=कमी ।

 **कैमरे में बंद अपाहिज कविता की व्याख्या –**

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज हैं ?

आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है ?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा )
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा ।

व्याख्या –कवि मीडिया के लोगों की मानसिकता का वर्णन करता है । मीडिया के लोग स्वयं को समर्थ व शक्तिशाली मानते हैं । वे ही दूरदर्शन पर बोलते हैं । अब वे एक बंद कमरे अर्थात स्टूडियो में एक कमजोर व्यक्ति को बुलाएँगे तथा उससे प्रश्न पूछेंगे । क्या आप अपाहिज हैं ? यदि हैं तो आप क्यों अपाहिज हैं ? क्या आपका अपाहिजपन आपको दुख देता है ? ये प्रश्न इतने बेतुके हैं कि अपाहिज इनका उत्तर नहीं दे पाएगा, जिसकी वजह से वह चुप रहेगा । इस बीच प्रश्नकर्ता कैमरे वाले को निर्देश देता है कि इसको (अपाहिज को) स्क्रीन पर बड़ा-बड़ा दिखाओ । फिर उससे प्रश्न पूछा जाएगा कि आपको कष्ट क्या है? अपने दुख को जल्दी बताइए । अपाहिज इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देगा क्योंकि ये प्रश्न उसका मजाक उड़ाते हैं।

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता हैं
 कैसा
यानी कैसा लगता हैं
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए

थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खोदेंगे?)
आ जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं

व्याख्या -इस काव्यांश में कवि कहता है कि मीडिया के लोग अपाहिज से बेतुके सवाल करते हैं । वे अपाहिज से पूछते हैं कि –अपाहिज होकर आपको कैसा लगता है ? यह बात सोच कर बताइए । यदि वह नहीं बता पाता तो वे स्वयं ही उत्तर देने की कोशिश करते हैं । वे इशारे करके बताते हैं कि क्या उन्हें ऐसा महसूस होता है ।

थोड़ा सोचकर और कोशिश करके बताइए । यदि आप इस समय नहीं बता पाएँगे तो सुनहरा अवसर खो देंगे । अपाहिज के पास इससे बढ़िया मौका नहीं हो सकता कि वह अपनी पीड़ा समाज के सामने रख सके । मीडियावाले कहते हैं कि हमारा लक्ष्य अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना है और इसके लिए हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे कि वह रोने लगेगा । वे समाज पर भी कटाक्ष करते हैं कि वे भी उसके रोने का इंतजार करते हैं । वह यह प्रश्न दर्शकों से नहीं पूछेगा ।

फिर हम परदे पर दिखलाएंगे
फुली हुई आँख की एक बडी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा हैं आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों को एक संग रुलाने हैं

आप और वह दोनों
(कैमरा बस करो, नहीं हुआ,रहनेदो,परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुसकुराएँगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद!

 **व्याख्या**-कवि कहता है कि दूरदर्शन वाले अपाहिज का मानसिक शोषण करते हैं । वे उसकी फूली हुई आँखों की तसवीर को बड़ा करके परदे पर दिखाएँगे । वे उसके होंठों पर होने वाली बेचैनी और कुछ न बोल पाने की तड़प को भी दिखाएँगे ऐसा करके वे दर्शकों को उसकी पीड़ा बताने की कोशिश करेंगे । वे कोशिश करते हैं कि वह रोने लगे । साक्षात्कार लेने वाले दर्शकों को धैर्य धारण करने के लिए कहते हैं ।वे दर्शकों व अपाहिज दोनों को एक साथ रुलाने की कोशिश करते हैं । तभी वे निर्देश देते हैं कि अब कैमरा बंद कर दो ।यदि अपाहिज अपना दर्द पूर्णत: व्यक्त न कर पाया तो कोई बात नहीं ।परदेका समय बहुत महँगा है । इस कार्यक्रम के बंद होते ही दूरदर्शन में कार्यरत सभी लोग मुस्कराते हैं और यह घोषणा करते हैं कि आप सभी दर्शक सामाजिक उद्देश्य से भरपूर कार्यक्रम देख रहे थे । इसमें थोड़ी-सी कमी यह रह गई कि हम आपदोनों को एक साथ रुला नहीं पाए । फिर भी यह कार्यक्रम देखने के लिए आप सबका धन्यवाद!